# ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ गुण है

**प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,**

**पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान**

जीवन में उन्नति का सबसे बड़ा सूत्र है– ईमानदारी। ईमानदार व्यक्ति सबका पूजनीय होता है और उस पर सब विश्वास करते हैं। जीवन के हर क्षेत्र में ईमानदारी सत्कार योग्य होती है। चाहे दुकानदार हो, चाहे अधिकारी हो, चाहे मंत्री हो या संत्री सबके लिए ईमानदारी उचित है। दुकानदार यदि ईमानदार होता है तो उसकी ग्राहकी बढ़ती है। ग्राहक को यह विश्वास हो जाता हैं कि अमुक दुकान से लिया गया समान शुद्ध रहता है। ग्राहक का विश्वास जम जाता है तो वह उसी दुकान से सब सामान खरीदता है। इससे दुकानदार को लाभ होता है। अधिकारी यदि ईमानदार होता है तो जनता को बहुत राहत मिलती है। जनता कार्य आसानी से हो जाता है। धन और समय की बचत होती है। मंत्री यदि ईमानदार होते हैं तो पूरा शासनतन्त्र उसी मार्ग पर चलता है। लोगों का विश्वास सरकार पर होता है। ऊपर से लेकर नीचे तक पूरा चैनल ही मंत्री के ईमानदार होने पर सही ढ़ंग से कार्य करता है।

हमारे देश भारत में राजा हरिशचन्द्र की कथा आज भी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध है। राजा हरिशचन्द्र ने स्वप्न में देखे गये सत्य के आधार पर अपना राज–पाट त्याग दिया था और एक डोम के यहां नौकरी करके अपना जीवन–यापन किया। ईमानदार व्यक्ति का चरित्र चौवीस कैरेट सोने के समान खरा होता है। जितना ही उसका परिक्षण होता है उतना ही उसमें निखार आता है। ईमानदारी मानव जीवन का सबसे बड़ा गुण है। चरित्रवान् व्यक्ति सर्वत्र पूजनीय होता है। कहा भी गया है कि यदि चरित्र भ्रष्ट हो जाये तो उस आदमी पर कोई विश्वास नहीं करता। किन्तु आज के युग में मनुष्य का उद्देश्य एकमात्र धन कमाना है। ईमानदारी को लोग महत्व नहीं दे रहे है।

भ्रष्टाचार समाज में आकंठ व्याप्त है। किसी भी कार्यालय में जाइये। बिना पैसे के काम होना मुश्किल है। धीरे–धीरे लोगों को विश्वास ही अधिकारियों पर से उठता जा रहा है। परीक्षा संचालित करने वाली संस्थाएं घूसखोरी का अड्डा बन गयी है। बिना परीक्षा दिये ही पैसे के

बल पर लोग नौकरी प्राप्त कर ले रहे हैं। पहले ईमानदारी केन्द्र में थी, किन्तु आजकल धन केन्द्र में हो गया है। जिसका परिणाम यह है कि भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। भ्रष्टाचार शिष्टाचार हो गया है। भरोसेमंद होना, दूसरों को हमारे भरोसेमंद प्रकृति के बारे में आस्वस्थ करके सम्बन्धों को मजबूत बनाने में मदद करता है। जो लोग बेईमान होते हैं उन्हें लोगों से एक बार झूठ बोलने के बाद शायद ही दूसरा मौका मिलता है।

ईमानदारी जीवन में एक अच्छे हथियार की तरह हैं। जो हमें बहुत से लाभों के द्वारा लाभान्वित करती है। ईमानदारी हमें जीवन में सब कुछ देती है। ईमानदारी जीवन में सफलता प्राप्त करने का सबसे अच्छा सूत्र है। जीवन में ईमानदार न होना, किसी के भी साथ वास्तविक और भरोसेमंद मित्रता या प्यार का रिश्ता बनाने में कठिन होता है। वे लोग जो आमतौर पर सत्य बोलते हैं वे बेहतर संसार बनाने में सक्षम होते है। कुछ लोग अपने प्रिय लोगों से झूठ बोलकर उन्हें ठग लेते है। ऐसे व्यक्ति के चरित्र पर कलंक का छींटा पड़ जाता है।

जीवन में पूरी तरह ईमानदार होना कठिन जरूर है लेकिन यह नीति जीवन में साथ–साथ चलती है। बेईमान होना बहुत ही आसान होता है। किन्तु बेईमानी थोड़ी दूर तक साथ देती है। ईमानदारी भगवान का उपहार है। जीवन में प्रतिष्ठा से जीने का उपकरण है। ईमानदारी हमें जीवन में किसी भी बुरी परिस्थिति का सामना करने की शक्ति देती है। इतिहास हमें बताता है कि झूठ बोलना पाप है और किसी भी परिस्थिति में झूठा व्यक्ति सफल नहीं हो सकता है। एक झूठ को छिपाने के लिए सौ झूठ बोले जाते हैं, फिर भी झूठ छिपता नहीं और समय आने पर अपना परिणाम दे देता है।

हमें पद और योग्यता की परवाह किये बिना सभी का सम्मान करना चाहिए। यदि हमें उनसे झूठ बोलते हैं तो हम उनका विश्वास कभी नहीं जीत सकते। विद्यार्थियों के लिए यह उनके जीवन का सूत्र है। किसी भी परीक्षा में जब साक्षात्कार के लिए विद्यार्थी जाता है तो उसके व्यक्तित्व के परीक्षण के समय यह देखा जाता हैं कि जीवन क्षेत्र में यह व्यक्ति कितना ईमानदार रहेगा। उससे अनेक प्रश्न पूछे जाते हैं और उस प्रश्नों का परीक्षण करके साक्षात्कार

मंडल यह पता लगाता हैं कि यह व्यक्ति कितना ईमानदार है। इसलिए ईमानदारी को जीवन में उतारना चाहिए।

भारतीय संस्कृति के आदर्श पुरुष भगवान श्रीराम और उनके पिता महाराज दशरथ ने प्राण जाये पर वचन न जायी की नीति का पालन किया। जीवन भर सत्य मार्ग का अनुकरण किया। भगवान राम ने सत्य और ईमानदारी का पालन करते हुए वनगमन को स्वीकार कर लिया और राजगद्दी का त्याग कर दिया। आजकल राजगद्दी के लिए लोगों में लड़ाइयां तक हो जाती है। लोग कुर्सी से चिपके रहते हैं, छोड़ना नहीं चाहते। भगवान श्रीराम ने हर क्षेत्र में मर्यादा की एक ऐसी लकीर खींची है, जिस तोड़ पाना मुश्किल ही नहीं असंभव है। इसीलिए भारतीय समाज में ईश्वर के रूप में उनकी पूजा होती है। ईश्वर वहीं होता है जो सर्वविध समर्थ होता है। ईमानदारी जीवन की अच्छी सम्पत्ति है।